लौह पुरुष

सरदार वल्लभ भाई पटेल

वह व्यक्ति जिसने भारत को जोड़ा

लेखक-सुखनन्दन पटेल

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Sukhnandan Patel 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

Author Contact no. 9755837171

ISBN: 978-93-7310-898-8

Cover Design: Goon
Typesetting: Sagar

First Edition: January 2026

सिद्धीविनायक ज्योतिष परामर्श, प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान केन्द्र

आचार्य डॉ. रज्जन प्रसाद पटैल

बीएस.सी.(बायो.), एम.ए. (अंग्रेजी साहित्य),

एम.ए.(ज्योतिर्विज्ञान), पीएच.डी. (वैदिक वास्तु)

निवास एवं ऑफिस - श्रीवास्तव कालोनी, दमोह, म.प्र.- 470661, मोब.- 9300694736

Mail Id- astro.rpppatel@gamil.com

दिनाङ्क 2-10-2025

भारत की पवित्र भूमि में समय-समय पर महान विभूतियों एवं महापुरुषों ने जन्म लिया,उन श्रेष्ठ महापुरुषों में सरदार वल्लभभाई पटेल जी का नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है। आपकी दृढ इच्छाशक्ति, कुशल नेतृत्व,साहसिक निर्णय और अथक प्रयासों से भारत के राजनीतिक एकीकरण जैसा महत्वपूर्ण कार्य सम्भव हो सका। जिससे सरदार पटेल जी को एक प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण महापुरुष का दर्जा प्राप्त हुआ । अतः "लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल" पुस्तक प्रकाशन के माध्यम से मानव समाज में तटस्थ भाव, कर्तव्यनिष्ठा एवं देश प्रेम की भावना का जागरण एवं प्रचार-प्रसार होगा येंसा मेरा विश्वाश है तथा मैं हृदय से कामना करता हूँ।

श्री सुखनन्दन पटैल जी द्वारा संकलित पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है जो कि निश्चित ही प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय कार्य है। पुस्तक के अध्ययन से सिद्ध हो रहा है कि लेखक ने काफी मेहनत से विभिन्न ग्रन्थों के अध्ययन ,मनन एवं चिन्तन से लेखन कार्य किया जिस कारण से यह पुस्तक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं मार्गदर्शक के रूप में उपयोगी साबित होगी।

श्री सुखनन्दन पटैल जी को हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ ।

आचार्य डॉ.रज्जन प्रसाद पटैल

लखन पटेल
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
पशुपालन एवं डेयरी विभाग,
मध्यप्रदेश शासन

मंत्रालय : कक्ष क्र. E-205 VB III
मंत्रालय दूरभाष : 0755–2708684
भोपाल निवास : बी–17 (74 बंगला) स्वामी दयानंद नगर, भोपाल (म.प्र.)
दूरभाष : 0755–2441228, 2558775
निवास : ई 7, जटाशंकर मंदिर के पास, दमोह (म.प्र.)
दूरभाष : 07812–313580
मो. नं. : 9425095703
E-mail: lakhanpatel2012@gmail.com

क्रमांक 246 /रा.मं (स्व.प्र.)/पशु. एवं डे./ दिनांक 21/09/2025

शुभकामना संदेश

बडे हर्ष का विषय है कि श्री सुखनंदन पटेल ग्राम पालर वि.ख. दमोह जिला के द्वारा " **लौह पुरूष सरदार बल्लभ भाई पटेल जी** " के जीवन गाथा पर, पुस्तक का विमोचन किया जाना हैं। इस पुस्तक प्रकाशन से लौह पुरूष सरदार बल्लभ भाई पटेल जी के द्वारा देशहित एवं समाज के उत्थान के लिए किए गए कार्यो की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होगी।

"पुस्तक के प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं"।

(लखन पटेल)

राहुल सिंह लोधी
संसद सदस्य (लोकसभा)
दमोह (मध्यप्रदेश)

सत्यमेव जयते

सदस्यः
• स्थायी समिति, कृषि, पशुपालन और खाद्य प्रसंस्करण
• परामर्शदात्री समिति, भारी उद्योग मंत्रालय

क्रमांक ..स.सा.:.कार्या/2025/ 745

दिनांक 22/7/2025

शुभकामना संदेश

लौह पुरूष् सरदार वल्लभ भाई पटैल जी भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी,वकील ओर राजनेता थे, जिन्हें भारत के एकीकरण के लिए भारत के लौह पुरूष् के रूप में जाना जाता है, उन्होंने ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के लिए लडाई लडी और स्वतंत्रता के बाद भारत के पहले उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री बने उन्होंने अपने दृढ संकल्प और प्रयासों से 562 रियासतों को सफलतापूर्वक भारतीय गणतंत्र में एकीकृत किया , जिससे देश की राष्ट्रीय एकता व अखण्डता सुनिश्चित हुई ।

अतः सरदार वल्लभ भाई पटैल जी की जीवनी पर आधारित पुस्तक "लौह पुरूष् वल्लभ भाई पटैल" के प्रकाशन हेतु श्री सुखनंदन पटैल जी को मेरी ओर से हार्दिक बधाई व शुभकानायें ।

(राहुल सिंह लोधी)

हार्दिक शुभकामनायें

लोह पुरुष वल्लभ भाई सरदार पटेल जी का जीवन और व्यक्तित्व इतना विराट है, जिसे वाणी से व्यक्त करना एवं शब्दों में पिरो पाना सम्भव नहीं है। पटेल जी की दृढ़ शक्ति,त्वरित निर्णय लेने की क्षमता,राष्ट्रीय गौरव की भावना एवं कुशल वाकपटुता उनके मजबूत तथा ठोस व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम थे जो उन्हें उनके समय में भी नेताओं से विशिष्ट बनाते हैं।

सरदार पटेल ने गाँधीवादी आन्दोलनों में जीवन्त भूमिका निभाते हुए, आज़ाद भारत के एकीकरण में, अखण्डता बनाये रखने में सर्वोपरि योगदान दिया। सरदार पटेल जी भारत की एकता और शक्ति के प्रतीक हैं, उन्होंने जटिल से जटिल समस्याओं का समाधान कर एक अखण्ड भारत को आकार दिया। उनका दृढ़ नेतृत्व और राष्ट्र समर्पण सदैव का गुण समाज का मार्गदर्शन करता रहेगा।

लेखक श्री सुखनन्दन पटैल ने सरदार पटेल जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुये "लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल" पुस्तक लिखने का जो प्रयास किया वह सराहनीय एवं तारिफेकाबिल है। आपकी द्वितीय पुस्तक प्रकाशन के शुभ अवसर पर हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

6/10/2024

श्री बैजनाथ पटैल दमोह मप्र

अनुक्रमणिका

जन्म एवं प्रारम्भिक जीवन 1

विद्यार्थी जीवन 3

निर्भय एवं साहसिक गुण 5

उच्च शिक्षा 7

राजनीति में प्रवेश 8

बैरिस्टरी का त्याग 10

नागपुर झण्डा सत्याग्रह 12

जेल यात्रा 15

राष्ट्रीय अध्यक्ष वल्लभ भाई 16

1942 की महाक्रान्ति 18

सरदार पटेल का त्याग 20

जूनागढ़ का प्रश्न 23

हैदराबाद समस्या 25

मुसलमानों को चेतावनी 27

रास्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर.एस.एस.) पर प्रतिबंध 29

रामराज्य की स्थापना 32

मैं सचाई को नहीं छोडूंगा 33

मैं गरीबों का दोस्त हूँ 35

पाकिस्तान को चुनौती 37

गांधी जी की हत्या 39

संविधान निर्माण में योगदान 43
देहावसान 47
लेखक परिचय 49

जन्म एवं प्रारम्भिक जीवन

वल्लभभाई का जन्म 31 अक्तूबर 1885 को गुजरात राज्य के करमसद गांव में हुआ था। उनके पिता झवेरभाई पटेल की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी एवं खेती ही से गुजर होती थी वह भी दूसरे के खेतों पर । आपकी कुछ स्वयं कि ज़मीन भी थी परन्तु आर्थिक स्थिति साधारण होते हुए भी झवेरभाई बहादुर एवं पक्के देशभक्त थे ।सन् 1857 की क्रांति में आप झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई की फौज में भर्ती होकर अंग्रेजों और उनके सहयोगियों से लड़े थे। इन्दौर के महाराजा ने आपको गिरफ्तार भी किया था, से आपका छुटकारा हो गया था । यह बात प्रसिद्ध है कि एक दिन इन्दौर के महाराजा ने अपने महल के उस कमरे के करीब ही शतरंज खेल रहे थे, जिसमें आप नज़रचंद थे। आप सींखचों के भीतर से महाराज की चालें देख रहे थे। शतरंज का आपको बहुत शौक था। आपने देखा कि महाराज जिस चाल से चल रहे थे वह उन्हें अवश्य मात दे देगी। इसलिये आपने महाराज को वह चाल चलने से रोका और दूसरी चाल बतलाई। महाराज ने झवेरभाई की बात मान ली और खेल में जीत गये। इस घटना से आपकी प्रतिष्ठा बढ़ गई । जेल से छुटकारा मिल गया। जेल से छूटकर आफ् अपने गांव की ज़मीन पर आगये और फिर खेती करने लगे ।

झवेरभाई के दो पुत्र हुए। बड़े भाई का नाम विट्ठलभाई और छोटे भाई का वल्लभ । विट्ठल भाई की तरह योग्य और बहादुर थे। वल्लभभाई का बचपन

माँ-बाप की देख-रेख में गांव में ही बीता और वहीं पर उनको प्रारंभिक शिक्षा दी गई। बाद में नदियाड गये और वहां की शिक्षा समाप्त कर बड़ौदा पहुँचे। बड़ौदा स्कूल में उनकी एक शिक्षक से कुछ कहा-सुनी हो गई, जिसके फलस्वरूप वल्लभभाई स्कूल से निकाल दिये गए। बाद में पुनः नदियाड जाकर वहीं से इन्होंने मैट्रिक पास किया।

विद्यार्थी जीवन

वल्लभभाई के बचपन की दो-एक बातें बड़ी मनोरंजक हैं। विद्यार्थी-जीवन में भी वल्लभभाई विद्यार्थियों के नेता थे। नदियाड के जिस स्कूल में वल्लभभाई पढ़ते थे वहीं के एक शिक्षक पुस्तकों का व्यापार भी करते थे और विद्यार्थियों को मजबूर करते थे कि वे पुस्तकें उन्हीं की दुकान से लें। वल्लभभाई को यह बात अच्छी न लगी। उन्होंने विद्यार्थियों को उकसाया कि कोई भी लड़का उनके यहां से पुस्तकें मोल न ले। लड़के बड़े उत्तेजित हुए और उन्होंने हड़ताल कर दी। एक सप्ताह स्कूल रहा । आखिर मास्टर साहब को झुकना पड़ा और हड़ताल खत्म हुई ।

इसी तरह वल्लभभाई जब दसवी कक्षा में पढ़ते थे, तब की एक घटना है। पहले उन्होंने संस्कृत ले रक्खी थी, बाद में उसमें कठिनाई पड़ने पर उन्होंने गुजराती ले ली। गुजराती के शिक्षक स्वयं संस्कृत के प्रेमी थे और जो लड़के संस्कृत नहीं पढ़ते थे, वे सदा उनसे अप्रसन्न रहते थे । वल्लभभाई जब पहली बार उनकी कक्षा में पहुँचे तो मास्टर साहब ने उनसे व्यंगपूर्वक कहा- "पधारिये महापुरुष !"

उन्हें क्या पता था कि उनकी वाणी एक दिन सत्य होकर रहेगी। मास्टर साहब ने फिर कहा- "संस्कृत छोड़ कर गुजराती लेना तुम जैसे होनहार लड़के को शोभा नहीं देता।"

"पर मास्टर साहब ! यदि हम सब ने संस्कृत ही ले ली होती तो आप क्या करते ?" वल्लभभाई ने उत्तर दिया। "शैतान कहीं का !" बेंच पर खड़े होने का हुक्म

अब गुरु शिष्य में खुली टक्कर होने लगी। मास्टर साहब रोज़ वल्लभभाई को घर के गृहकार्यों में पहाड़ा लिख लाने को देते। दसवें दर्जे के किसी भी स्वाभिमानी विद्यार्थी के लिये यह अपमानजनक था। वल्लभभाई ने भी अपमान का बदला लेने की ठान ली।

पहाड़े को गुजराती में 'पाडे' कहते हैं और भैंस के बच्चे को भी 'पाडे' कहते हैं। एक दिन वल्लभभाई से मास्टर ने पूछा- "अरे तुम पाडे लाये ?"

वल्लभभाई ने अपने स्वाभाविक विनोद के साथ उत्तर दिया - "मास्टर साहब ! पाडे लाया तो था, पर स्कूल के दरवाजे पर उनमें से दो भड़क पड़े और उनके भड़कते ही सारे के सारे भाग गये।"

मास्टर साहब गुस्से से लाल हो गये। इसकी रिपोर्ट उन्होंने हैडमास्टर के पास भेजी। हैडमास्टर ने वल्लभभाई को अपने पास बुलाया और पूरा हाल पूछा। बाद में बिना कोई दण्ड दिये उन्हें यह कह कर छोड़ दिया-"ऐसा लड़का मैंने अभी तक नहीं देखा।"

निर्भय एवं साहसिक गुण

वल्लभभाई में डर का नाम-निशान नहीं था। बचपन से ही वे निडर थे । जब छोटे थे तो एक बार बीमार हुए। कांख में एक फोड़ा निकला। गांव वालों ने दवा बताई और कहा- 'लोहा गर्म करके फोड़े में भोंक दो।' बल्लभभाई तैयार हो गए। लोहे की सलाख गर्म थी । भोंकने वाला एक ओर वल्लभ जैसे कोमल लड़के को और दूसरी ओर लोहे की गरम सलाख को देखकर हिच-किचाया। वल्लभभाई झुंझला उठे- 'जल्दी भोंको । क्या देख रहे हो ? लोहा ठंडा हो जायगा। यदि तुम से नहीं होता तो लाओ, मैं अपने ही हाथों भोंक लूँ' -कह कर उन्होंने गरम सलाख से घाव को दाग दिया और उफ तक न की,खतरों से खेलना आपको सदा प्रिय रहा। एक बार आप ने कहा था, "मेरे साथ कोई खिलवाड़ नहीं कर सकता, मैं किसी ऐसे काम में नहीं पड़ता जिसमें खतरा न हो । जो लोग आपत्तियों को निमन्त्रण दें उनकी सहायता के लिए मैं सदा तैयार हूँ।"

"बल्लभभाई बरफ से ढके ज्वालामुखी के समान हैं-" स्वर्गीय मौलाना शौकत अली ने भी एक बार कहा था ।

बरफ से ढके हों या नहीं, किन्तु ज्वालामुखी आप अवश्य थे। उनके हृदय में सदा एक आग जला करती थी, ऐसी आग जो एक ही बार में सहस्रों को भस्म

करने की क्षमता रखती हो। उसी आग से उनका खून हमेशा उबला करता था, भुजाएँ फड़कती रहती थीं, और वाणी सदा आग उगलने के लिए तैयार बैठी रहती थी।

उच्च शिक्षा

कालेज की शिक्षा का खर्च उठाने की हैसियत इनके माता-पिता की नहीं थी। वल्लभभाई को भी कालेज की शिक्षा की ओर विशेष रुचि नहीं थी। वह विदेश जा कर वैरिस्टर बनने का स्वप्न देख रहे थे। पर धन तो पास था नहीं । अन्त में वल्लभभाई ने एक तरकीब सोची। उन्होंने मुख्तारी की परीक्षा पास की और गोधरा में सुख़्तार हो गए। वहां इनकी प्रक्टिस खूब चली ।

दिन रात एक करके इन्होंने कुछ पूँजी एकत्र कर ली और एक कम्पनी से विदेश जाने के लिए बातचीत करने लगे । इसी बीच कम्पनी का एक पत्र कहीं से इनके बड़े भाई विठ्ठलभाई पटेल के हाथ लग गया। बड़े भाई ने कहा- "पहले मुझे जाने दो, मेरे लौटने पर तुम हो आना।" वल्लभभाई मान गए । फलतः उनके पन्द्रह दिन बाद ही विठ्ठलभाई वैरिस्टरी पढ़ने विलायत चले गये । तीन वर्ष बाद जब वे लौटे तब वल्लभभाई गए और वहां से प्रथम श्रेणी में वैरिस्टरी पास करके लौट आये। उधर वकालत करने के साथ ही विठ्ठलभाई राजनीति में भी काफ़ी भाग लेने लग गये थे, अतः उन्होंने वल्लभभाई से कहा कि, "तुम कुटुम्ब का पालन-पोषण करो, मैं देश सेवा में सक्रिय भाग लूंगा।" ऐसा ही हुआ । वल्लभभाई ने यह राय सहर्ष स्वीकार कर ली।

राजनीति में प्रवेश

पर ज्यों ज्यों गुजरात की राजनीति में गांधी जी का प्रवेश होने लगा, वल्लभभाई की विचारधारा भी बदलने लगी। इसी बीच गोधरा में गांधी जी की अध्यक्षता में प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन हुआ,जिसमें रचनात्मक कार्यों की उपसमिति के मन्त्री वल्लभभाई बनाए गए। इन्होंने बड़े उत्साह के साथ काम किया और शीघ्र ही अपने कामों के लिए गुजरात भर में प्रसिद्ध हो गये।

सब से पहला काम आपने गुजरात में वेगार प्रथा बन्द करवाने का किया। पहले कमिश्नर को पत्र लिखा गया। कमिश्नर का उत्तर न आने पर यह चेतावनी दी गई कि सात दिन के अन्दर वेगार प्रथा बन्द न हुई तो जनता को सत्याग्रह के लिये कहा जायगा। इस पर कमिश्नर ने वल्लभभाई को सलाह-मश्वरे के लिये बुलाया। बेगार प्रथा बन्द की गई। सार्वजनिक जीवन में वल्लभभाई की यह पहली विजय थी। गांधी जी से आपका परिचय बढ़ता गया।

पहले-पहल आपकी गांधी जी की रीति-नीति के प्रति विशेष आकर्षण नहीं हुआ। अहिंसा और सत्याग्रह दोनों कमज़ोर आदमियों के हथियार प्रतीत हुए। किन्तु जब अहमदाबाद के मज़दूरों को गांधी जी ने विजय दिलवाई और गांधी जी के आत्मबल का आपको परिचय मिला तब आप गांधी जी के मित्र बन गये। आपका झुकाव भी राजनीति की ओर होने लगा।

उस वर्ष खेड़ा जिले की फसल खराब हो गई थी। किसानों के पास लगान अदा करने योग्य भी पैसा नहीं था। किसानों ने सरकार से फरियाद की। सरकार ने उस पर ध्यान नहीं दिया। लगान वसूल करने की धमकी दी। किसान गांधी जी की शरण में आये। गांधी जी ने जांच पड़ताल के बाद खेड़ा के किसानों के पक्ष में सरकार से लड़ने का निश्चय किया। अहमदाबाद के मित्रों में गांधी जी ने इस बात की चर्चा की और पूछा कि "आप में से कौन मेरे साथ खेड़ा चलेगा और मेरा सहायक होगा ?" बल्लभभाई ने तुरन्त अपना नाम लिखा दिया। खेड़ा के किसानों को सत्याग्रह के लिये तैयार करने के लिये वल्लभभाई ने स्वयं गांवों का भ्रमण किया। किसी को स्वप्न में भी ध्यान न था कि अहमदाबाद का सर्वश्रेष्ठ बैरिस्टर गांव के कंटीले रास्तों पर पैदल घूम घूम कर किसानों से बातें करेगा। बलम भाई का यह स्वभाव बचपन से था कि या तो बह काम को हाथ में लेते नहीं थे, यदि लेते थे तो पूरी तरह निभाते थे। उनके दिन-रात भ्रमण का ही यह परिणाम था कि खेड़ा के किसान कमर कस कर लगानबन्दी के सत्याग्रह के लिये तैयार हो गये। किसानों की दृढ़ता देखकर सरकार को झुकना पड़ा। लगान माफ कर दिया गया। गांधी जी के सत्याग्रह का चमत्कार देखकर बल्लभभाई गांधी जी के शिष्य बन गये। इस घटना के बाद गांधी जी ने वल्लभभाई में अपना ऐसा विश्वासी मित्र पाया जिसने जीवन भर उनका साथ दिया।

बैरिस्टरी का त्याग

पहले महायुद्ध के बाद रॉलट-ऐक्ट का विरोध करने के लिये गांधी जी ने देशव्यापी हड़ताल की घोषणा की थी। 6 मार्च 1919 को देश ने नये युग में प्रवेश किया। अहमदाबाद में वल्लभभाई ने हड़ताल को इतना सफल बनाया कि सरकार डर गई। जुलूस का गोलियों से सत्कार किया गया। 1920 में काँग्रेस ने असहयोग का प्रस्ताव पास किया। वल्लभभाई ने वैरिस्टरी का ही परित्याग नहीं किया, वरन् अपने लड़कों को भी विदेश जाने से रोक दिया। इससे पूर्व आप उन्हें उच्च शिक्षा के लिये विदेश भेजने की पूरी तैयारी कर चुके थे।

गांधीजी के गिरफ्तार होने के बाद गुजरात के नेतृत्व का भार आप के ही कन्धों पर पड़ा। आपने इस काम को बड़ी सफलता से निभाया। असहयोग के कारण स्कूलों व कालिजों से बाहर आए विद्यार्थियों के लिए आपने 'गुजरात-विद्यापीठ' की स्थापना की। विद्यापीठ के लिये धन-संग्रह का काम भी किया। सार्वजनिक कार्यों के लिये धन एकत्र करने का आपका यह पहला अनुभव था। इस कार्य के लिये आप को बर्मा भी जाना पड़ा। गुजरात विद्यापीठ ने राष्ट्रीय-निर्माण में देश की महत्त्वपूर्ण सेवाएं की हैं।

बोरसद सत्याग्रह- सन् 1922 में आपको सरकार से एकऔर टक्कर लेनी पड़ी। बोरसद गुजरात का एक जिला है। जिले के किसानों पर सरकार ने इतना लगान

बढ़ा दिया था कि जनता में त्राहि-त्राहि मच गई। बात यह थी कि उन दिनों बोरसद में देवर बाबा नाम के एक डाकू ने किसानों व जमींदारों में आतङ्क फैलाया हुवा था। उस डाकू से मुकाबला करने के लिये सरकार ने पुलिस के सिपाही तैनात किये थे। वे सिपाही अपने काम में कामयाब नहीं हुए। तब सरकार ने एक और मुस्लिम डाकू को अपने पक्ष में लेकर देवर बाबा को गिरफ्तार करने की। बोरसद में एक की जगह दो डाकू होगये। मुस्लिम डाकू ने भी जनता को लूटना शुरू कर दिया। इन डाकुओं के साथ पुलिस वाले भी शामिल हो जाते थे।

लोग इतना डर गये कि शाम होते ही घरों के दरवाजे बन्द कर लेते थे। कोई दिन ऐसा नहीं जाता थी कि गांवों में डाका न पड़े या खून-खराबी न होती हो। गांवों में हाहाकार मचने लगा। सरकार पर लोगों का विश्वास नहीं रहा। तब लोग वल्लभभाई के पास पहुंचे। उन्हें अपनी मुसीबतों की कहानी सुनाई। वल्लभभाई स्वयं बोरसद गये, जांच पड़ताल की।

इस बीच सरकार ने सिपाहियों पर आये खर्च को वसूल करने के लिये किसानों पर नया कर लगा दिया। वल्लभभाई ने किसानों को इस नये कर को अदा करने से रोका और डाकुओं से मुकाबला करने के लिये गांव वालों को स्वयं-सेवक दल बनाने का आदेश दिया। पुलिस की जरूरत ही नहीं रही। 200 स्वयं-सेवक गांव वालों की रक्षा के लिये तैयार हो गये। स्वयं-सेवकों की पहरेदारी शुरू होते ही डाके बन्द हो गये। बम्बई सरकार ने किसानों को बहुत डराया, धमकाया। नया कर लेने की कोशिशें कीं, किन्तु बल्लभभाई के सामने विफल हुए। आखिर सरकार को अपना हुक्म वापस लेना पड़ा। वल्लभभाई की विजय हुई। बोरसद की इस विजय ने वल्लभभाई का नाम देश भर में प्रसिद्ध कर दिया।

नागपुर झण्डा सत्याग्रह

इसके बाद आप ने नागपुर झण्डा सत्याग्रह का नेतृत्व किया । नागपुर की पुलिस ने लोगों को नागपुर के एक हिस्से में से राष्ट्रीय झण्डा लेकर निकलने की मनाही की थी। नागपुर कांग्रेस के स्वयं सेवकों ने इस सरकारी आज्ञा के विरुद्ध सत्याग्रह करने का निश्चय किया । सेठ जमनालाल बजाज इस सत्याग्रह के अगुआ थे। उनका गिरफ्तारी के बाद कांग्रेस ने वल्लभभाई से इस युद्ध का दायित्व संभालने का अनुरोध किया । वल्लभभाई ने नागपुर पहुँच कर सत्याग्रह की बागडोर अपने हाथों में ली। यहाँ भी आपको विजय हुई। पुलिस को अपना हुक्म वापस लेना पड़ा ।

उसके बाद आपने गुजरात के बाढ़-पीड़ितों के ऊपर अन्याय पूर्ण कर लगा दिया। किसानों ने यह लगान अदा न करने का प्रण किया । वल्लभभाई ने उन्हें चेतावनी दी कि "लगान अदा न करने का अर्थ सरकार से युद्ध करना है। युद्ध में उन्हें असोम कष्ट उठाने पड़ेंगे। जमीन जयदाद का मोद छोड़ना पड़ेगा। सरकार तुम्हें मिट्टी में मिला देने की कोशिश करेगी। तुम्हारी स्त्रियां दाने-दाने को तरसेंगी । तुम्हारे बच्चे एक-एक बूंद दूध के बिना भूखे मर जायेंगे। धन-माल की जब्ती की जायगी। वह सब देखना होगा । । इतनी मुसीबतें झेलने का साहस हो तो युद्ध का प्रारम्भ करो अन्यथा चुप हो कर सरकार के आगे झुक जाओ।" किसानों ने आपको विश्वास दिलाया कि वे अन्याय के आगे झुकने की अपेक्षा

मौत को पसन्द करेंगे। किसानों का दृढ़ निश्चय देख कर वल्लभभाई ने इनके नेतृत्व का भार उठाया। लड़ाई में आगे कदम रखकर आप पीछे हटना जानते ही नहीं थे, इसीलिये आपने कदम रखने से पहले ही जनता को चेतावनी दे दी थी।

पहले आपने गवर्नर को सरकारी निश्चय पर पुनर्विचार करने की सुझाव भेजा। सरकार ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया और लगान वधूल करने की निश्चित तारीख का ऐलान कर दिया। इस ऐलान के बाद बल्लभभाई ने भी किसानों से कह दिया कि वे लगान सरकार को न दें। दोनों ओर से युद्ध शुरू हो गया।

इस युद्ध में सफल होने के कारण ही आपको 'सरदार' की उपाधि मिली थी। तभी से आपके नाम के आगे 'सरदार' लिखा जाने लगा।

बारदौली सत्याग्रह की व्यवस्था में सरदार ने अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया। आपने पूरे जिले को भागों में बाँट कर उनमें सत्याग्रह छावनियाँ बनादीं। इन छावनियों में सत्याग्रही रहते थे और एक मुखिया रहता था। छावनियों में परस्पर सम्पर्क रखने के लिए आप ने सन्देश-वाहकों की भी व्यवस्था की थी। कुछ जासूर भी रखे थे जो सरकार के अधिकारियों की चालों का विवरण सरदार को देते रहते थे।

सरकार ने भी इस सत्याग्रह को कुचलने में पूरी शक्ति लगा दी। बम्बई के गर्वनर ने ऐलान कर दिया कि "बारदौली" के सत्याग्रह को कुचलने में ब्रिटिश साम्राज्य की पूरी शक्ति लगा दी जायगी। सरकार ने गुण्डों की फौज तैयार की जो गाँव-गाँव में जाकर किसानों को मारती-पीटती थी और घरों में घुस कर लूट-मार करती थी। औरतों पर बलात्कार किया जाता था।

लेकिन इन अत्याचारों से किसानों के निश्चय में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वे अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे। लगान भी सरकारी खजाने में जमा नहीं हुई। तब

सरकार ने ज़मीन-जायदाद कुर्क करनी शुरू की। लेकिन सरकार को कुर्की का माल लेने वाला कोई खरीदार ही नहीं मिलता था।

सरदार ने बिल्कुल सैनिक व्यवस्था की हुई थी। हर गाँव में स्वयंसेवक तैनात थे। कुर्की करने वाले सरकारी अफसर को देखते ही वे बिगुल बजा देते थे। बिगुल सुनकर गाँव के किसान खेतों में या जङ्गलों में चले जाते थे। गाँव सुनसान हो जाता था। पुलिस को यह जानना भी कठिन हो जाता था कि किसका कौन सा घर है।

बारदौली सत्याग्रह बाद में इतना महत्त्व का हो गया कि इसे देशव्यापी आन्दोलन का रूप मिल गया। बम्बई विधानसभा के कुछ सदस्यों ने बारदौली के अत्याचारों पर रोष प्रकट करने के लिये विधानसभा की सदस्यता से त्याग-पत्र भी दे दिये। अन्त में सरकार को झुकना पड़ा। जनता की जीत हुई। वल्लभभाई विजयी सेनापति बने। उनको राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रथम श्रेणी के नेताओं में गिना जाने लगा।

जेल यात्रा

बारदौली की विजय ने एक बार और गांधी जी को विश्वास दिला दिया कि सत्याग्रह का अस्त्र अमोघ है। इसका प्रयोग यदि सरदार जैसे सेनानी के हाथ से हो तो वह अवश्य सफल हो सकता है।

अंग्रेजों के खिलाफ सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया गया। दूसरे दिन के 8 बजे तक रात भर भूख-प्यास की परबाह किये बिना वहीं बैठे रहे। उस दिन सरकारी सिपाहियों ने बड़ी निर्दयता से लाठी प्रहार किया। सैंकड़ों के सिर फूटे, सैंकड़ों बेहोश हुए। सरदार वल्लभभाई गिरफ्तार कर के जेल भेज दिये गये । मुकद्दमा चला, तीन महीने की सजा सुनाई गई ।

इस बीच गांधी-इरविन समझौता हो गया। समझौते के फल-स्वरूप सभी राजबन्दी रिहा किये गए। आप भी जेल से छूटे ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष वल्लभ भाई

सरदार वल्लभभाई की राष्ट्रीय सेवाओं से प्रमाणित होकर देश ने उन्हें कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन का अध्यक्ष चुना। उस समय यह सन्मान देकर ही गरीब देशवासी अपनी कृतज्ञता प्रकट करते थे। इससे बड़ा पुरस्कार उनके पास नहीं था। कराची कांग्रेस अधिवेशन घटनापूर्ण अधिवेशन था। अधिवेशन से कुछ दिन पूर्व ही सरकार ने भगतसिंह को फांसी दी थी और कुछ दिन पूर्व गांधी-इरविन समझौता भी हुआ था। सरदार वन्नभभाई ने सभापति के जुलूस का समारोह शहीद भगतसिंह की याद में स्थगित कर दिया। अध्यक्ष-पद से आपने जो भाषण दिया वह भी अनोखा था-बहुत छोटा और सारगर्भित।

कराची कांग्रेस अधिवेशन के बाद शीघ्र ही फिर सत्याग्रह की घोषणा हो गई। गांधी जी विलायत से खाली हाथ आये थे। सरकार ने कांग्रेस को कुचलने का निश्चय किया। सरदार वल्लभभाई भी पुनः गिरफ्तार कर लिये गये। इस बार जेल जाने पर आपका स्वास्थ्य बहुत गिर गया। इसलिये मियाद से पहले ही आपको जेल-मुक्त करना पड़ा ।

डाक्टरों ने पूर्ण विश्राम की सलाह दी। किन्तु देश में चुनाव का युद्ध शुरू हो गया था। डाक्टरों की सलाह न मान कर भी आपने कांग्रेस उम्मीदवारों की

सफलता के लिये देश का भ्रमण किया। पंजाब, युक्त-प्रान्त, बिहार, आसाम आदि दूर-दूर प्रदेशों में भी आपका दौरा हुआ।

कांग्रेस के उम्मीदवारों का निर्णय भी आपके हाथ में था। आपही कांग्रेस संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष थे। इस संसदीय बोर्ड का काम कांग्रेस के टिकट पर गए प्रतिनिधियों और चुने गए मन्त्रियों को रास्ता दिखलाना था। संसदीय बोर्ड की आज्ञा से ही मन्त्रियों को शासन-नीति का निश्चय करना पड़ता था । यदि कोई मन्त्री कांग्रेस के सिद्धान्तों के प्रतिकूल आचरण करता था तो वह वल्लभभाई के कड़े अनुशासन से बच नहीं पाता था ।

सरदार वल्लभभाई ने मन्त्रियों पर कड़ी निगरानी रखी थी। आठ प्रदेशों में कांग्रेस का मन्त्रिमण्डल शासन कर रहा था । और उन आठों प्रदेशों के शासक मन्त्रियों की लगाम अकेले सरदार के हाथ में थी। कांग्रेस की नोति के विरुद्ध चलने पर मन्त्रियों को अपने पद से त्याग-पत्र देने के लिये आप विवश कर देते थे। मध्यप्रान्त के मुख्य-मन्त्री डाक्टर खरे को इसी तरह अपना पद छोड़ना पड़ा था।

1942 की महाक्रान्ति

1942 में गांधी जी ने स्वाधीनता के अन्तिम युद्ध का ऐलान किया। सरदार वल्लभभाई भी कार्यसमिति के अन्य सदस्यों के साथ अहमदनगर जेल में बन्द कर दिये गए। 6 अगस्त से पूर्व आपने जो भाषण दिये थे उनमें कहा था कि स्वाधीनता का यह युद्ध एक सप्ताह से अधिक नहीं चलेगा। एक सप्ताह में ही अंग्रेज घुटने टेक देंगे।

15 जून 1945 के दिन आपको अन्य नेताओं के साथ ही जेल से मुक्त किया गया। उन दिनों अंग्रेजी सरकार ने भारत को आजादी देने की घोषणा कर दिया था। मुस्लिम लीग रास्ते में रुकावटें डाल रही थी। आपने मुस्लिम लीग को इतनी खरी-खरी बातें सुनाई कि लीगी मुस्लमान आपके दुश्मन बन गये। आपका कहना था कि "हम अंग्रेजों से भी आजादी के लिये लड़ेंगे और जो मुस्लमान रास्ते का रोड़ा बनेंगे तो उनसे भी लड़ेंगे।" मि० जिन्ना ने कहा था कि "मुस्लमानों की स्वीकृति के बिना आजादी दी गई तो हिन्दुस्तान में तलवारें चल जायंगी, खून की नदियां यह जायेगी।" आपने उत्तर दिया- "तलवार का जवाब तलवार से दिया जायगा। खून की नदियाँ बहाने वाले को पूरी सजा दी जायगी।"

आपने जनता को समझाया कि आत्मरक्षा के लिये इथियार उठाना हिंसा नहीं है। अहिंसा कमजोर का नहीं बहादुरों का हथियार है। कायर बनकर मरने की अपेक्षा हथियार चलाते हुए मरना अधिक अच्छा है।

सरदार पटेल का त्याग

`15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ जवाहरलाल नेहरू देश की पहले प्रधानमंत्री बने, यह इसलिए हुआ क्योंकि ब्रिटिश सरकार की तरफ से यह कैबिनेट मिशन प्लान था कि अंतिम सरकार के तौर पर वायसराय की अध्यक्षता में एक्जीक्यूटिव काउंसिल बनेगी कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष इस काउंसिल का वाइस प्रेसिडेंट बनेगा आजादी के बाद इस वाईस प्रेसिडेंट का प्रधानमंत्री बनाना तय था, जिस समय यह पूरी चर्चा और कवायत चल रही थी उसी समय मौलाना अबुल कलाम आजाद कांग्रेस की अध्यक्ष थे कलाम आजाद 1940 से ही इस पद पर बने हुए थे महात्मा गांधी चाहते थे की अब्दुल कलाम आजाद यह पद छोड़ें, लेकिन वह ऐसा नहीं करना चाहते थे, आखिरकार गांधी जी का दबाव काम आया और मौलाना अबुल कलाम आजाद ने कांग्रेस अध्यक्ष का पद छोड़ दिया, इसके बाद कांग्रेस के नए अध्यक्ष की तलाश शुरू हुई दूसरे शब्दों में कहें तो देश के भावी प्रधानमंत्री का चेहरा खोजा जा रहा था, अप्रैल 1946 में कांग्रेस कार्य समिति की मीटिंग बुलाई गई इस मीटिंग में महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, डॉ राजेंद्र प्रसाद, खान अब्दुल गफ्फार खान, आचार्य जेबी कृपलानी समेत अन्य दिग्गज नेता शामिल हुए, उस समय कांग्रेस अध्यक्ष का चुनाव प्रांतीय कांग्रेस कमेटियां करती थी कांग्रेस की 15 प्रान्तीय कमेटी से 12 सरदार वल्लभभाई पटेल के पक्ष में थी

इसकी वजह थी कि सरदार पटेल की संगठन पर पकड़ काफी मजबूत थी उस समय तीन कमेटियों ने जेबी कृपलानी और पी सीतारमैया का नाम प्रस्तावित किया था इससे एक बात तो साफ थी कि बहुमत पटेल के पक्ष में था, लेकिन महात्मा गांधी प्रधानमंत्री पद पर जवाहरलाल नेहरू को देखना चाहते थे, महात्मा गांधी की भावनाओं का सम्मान करते हुए महात्मा गांधी जी के आग्रह पर सरदार पटेल ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली और इस तरह सरदार पटेल ने प्रधानमंत्री पद का त्याग कर दिया।

कांग्रेस मन्त्रिमण्डल बनने पर आपको प्रचार, रियासती विभाग और गृह-विभाग का मन्त्री बनाया गया। तीनों विभागों का सफलता से सञ्चालन करते हुए आपने जिस राजनैतिक बुध्दिमत्ता का परिचय दिया उसकी प्रशंसा विदेशों के राजनीतिज्ञों ने भी मुक्तकंठ से की है। आप तीनों विभागों के मंत्री हाने के साथ उपप्रधान मंत्री भी थे।

आप जिस काम का निश्चय कर लेते थे उसे पूरा करने की बाजी लगा देते थे। स्वाधीनता होने के बाद 15 अगस्त तक कई बार देश को आपको दृढ़ता ने ही बचाया । 9 दिसम्बर से विधान-सभा का अधिवेशन होने की घोषणा हो चुकी थी। लीग ने विधान सभा का बहिष्कार किया था। ब्रिटिश प्रधानमन्त्री भी विधान-सभा को स्थगित करवाने का यत्न कर रहा था । कुछ दिन पहले आपको लन्दन का बुलावा आया। आपने लन्दन जाने से इन्कार कर दिया। जवाहरलाल जी लन्दन गये। जनता को सन्देह था कि कहीं इन चालों से ब्रिटिश सरकार लीग से मिल कर विधान-सभा को अनिश्चित काल के लिए स्थगित न करवा दे। जनता के विश्वास को दृढ़ करने के लिए आपने वंबई में की थी कि "आकाश चाहे गिर पड़े, पृथ्वी चाहे फट जाय, विधान-सभा का अधिवेशन 9 दिसम्बर से पीछे नहीं टल सकता।" अन्त में आपकी ही बात पूरी हुई। विधान-सभा 9 दिसम्बर को ही शुरू हुई। जवाहरलाल जी को लन्दन से दो-तीन दिन में ही वापस आना पड़ा ।

स्वाधीनता मिलने के बाद यह देश में अराजकता फैल जायेगी। डर था कि सारे रियासतें अपनी स्वतन्त्र सरकारें कायम कर लेंगी। मुस्लिम-जनता विद्रोह कर देगी। देश में अराजकता फैल जायगी। यह डर निराधार नहीं थे। स्वाधीनता देते हुए अंग्रेज अविश्वासों का बीज बो गये थे। हिन्दुस्तान की 600 से अधिक रियासतों को वे आजादी दे गये थे और हिन्दुस्तान की मुस्लिम जनता को खून बहाने के लिए उकसा गये थे। किन्तु सरदार की कूटनीतिज्ञता ने उनकी चालों को परास्त कर दिया

जूनागढ़ का प्रश्न

रियासती विभाग का मन्त्री बनते समय आपने ऐलान कर दिया कि "भारत सरकार रियासतों के साथ परस्पर सहयोग की नीति से चलेगी। रियासतों को स्मरण रखना चाहिये कि यदि वे जनता की आवाज़ को नहीं मानेंगी तो उन्हें अराजकता का सामना करना पड़ेगा । इसलिये उनका हित इसी में है कि वे भारत सरकार के साथ मित्रता निभाते हुए शासन करें । आपने यह भी ऐलान कर दिया कि जो रियासत जनता की राय को न मानकर किसी और देश से सन्धि करेगी उसे हम अपना शत्रु समर्थोंगे । सरदार की कोशिशों से स्वाधीनता मिलने के बाद दो वर्षों में ही प्रायः सभी रियासतों ने जनता की राय मानते हुए भारत सरकार से सन्धि कर ली। केवल काश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद की सरकारों ने स्वतन्त्र रहने का निश्चय कायम रखा। काश्मीर पर पाकिस्तान की सेनाओं ने हमला कर दिया। इसलिये उसे भी भारतीय संघ के साथ होने की घोषणा करनी पड़ी ।

जूनागढ़ में भी पाकिस्तान ने पैर फैलाने चाहे थे। पाकिस्तान की चालों को मात देने के लिये आपने जूनागढ़ के चारों ओर के इलाकों मानवदार, मंगरोल और बावरीवाड में ब्रिगेडियर गुरुदयालसिंह के सेनापतित्व में अपनी सेनायें भेज दीं। इस बीच श्यामलदास गांधी ने अपने स्वयंसेवकों के साथ जूनागढ़ में प्रवेश किया । जूनागढ़ का नवाब रियासत छोड़कर भाग गया। जूनागढ़ में जनता की

हकूमत कायम होगई । 12 नवम्बर 1947 को जूनागढ़ पहुँचकर आपने हैदराबाद को भी चेतावनी दी थी कि "यदि हैदराबाद का नवाब भी उल्टी चाले चलता रहा तो उसका भविष्य भी वही होगा जा जूना-गढ़ के नवाब का हुआ है।"

हैदराबाद समस्या

हैदराबाद की उलझनें सुलझाने में पटेल को सबसे ज़्यादा देर लगी। हैदराबाद का झुकाव पाकिस्तान से सन्धि करने का था। कानूनी तौर पर हैदराबाद को ऐसा करने का हक़ था- किन्तु 80 फ्री सदी जनता की राय कर सकता था। सरदार चेतावनी देदी थी कि को ठुकरा कर ही हैदराबाद ऐसा पटेल ने हैदराबाद के नवाब को वे पाकिस्तान का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करेंगे। आखिर हैदराबाद के नवाब को मज़बूर होना पड़ा कि वह भारत सरकार से सन्धि करे। इस सन्धि की चर्चा करते हुए सरदार पटेल ने 29 नवम्बर 1947 को भारतीय संसद में एक बयान दिया था जिसमें आपने भारत और हैदराबाद के नये 'यथापूर्व समझौते' (Standstill Agreement) की व्याख्या की थी। हैदराबाद ने इस समझौते को कई बार तोड़ा और पाकिस्तान को करोड़ों रुपये का कर्जा दिया। तब सरदार पटेल की आज्ञा से भारत की सेनाओं ने जनरल चौधरी के सेनापतित्त्व में हैदराबाद में प्रवेश किया। उस समय रियासत के धर्मान्ध मुसलमान कासिम रजवी के नेतृत्व में वहाँ की हिन्दू-प्रजा पर अत्याचार कर रहे थे। शासन के सब महकमों में अराजकता फैली हुई थी। एक सप्ताह की लड़ाई में ही हैदराबाद ने आत्त्म-समर्पण कर दिया। नवाब ने यह स्वीकार किया कि वे रजवी की कठपुतली थे।

रियासतों को भारत सरकार के नीचे लाने के साथ एक काम यह भी था कि छोटी-छोटी रियासतों को मिला कर बड़े राज्य बनाए जायें। सब से पहले आपने काठिया-वाड़ की छोटी-छोटी रियासतों को मिलाकर 'सौराष्ट्र राज्य' की स्थापना की। अब तो सभी रियासतें बड़े-बड़े राज्यों में शामिल हो चुकी हैं। मध्यभारत, राजस्थान, हिमाचल, विन्ध्य-प्रदेश आदि राज्य बन गये हैं। संघों के मन्त्री-मंडलों का निर्माण जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों में से होता है।

मुसलमानों को चेतावनी

रियासतों के प्रश्न के बाद सब से जटिल प्रश्न साम्प्रदायिकता का था, जिससे स्वतंत्र भारत को खतरा था। साम्प्रदायिकता के प्रश्न को हल करने के लिये भी सरदार वल्लभभाई ने अनथक परिश्रम किया।

30 सितम्बर, 1947 को, जब कि पंजाब की भूमि खून से लाल हो चुकी थी, आप स्वयं अमृतसर गये और वहाँ सिख नेताओं से मिलकर शान्ति स्थापना के लिए सलाह-मश्वरा किया। आपने सिक्खों से प्रार्थना की कि वे मुस्लिम को सुरक्षित रूप से पाकिस्तान जाने द। आपकी प्रार्थना का यह प्रभाव हुआ कि सैनिक सहायता के बिना ही सब मुस्लिम अमृतसर से गुजर कर लाहौर पहुँच सके। 22 अक्तूबर 1947 को आप से पटियाला के दरबार हॉल में पंथिक-कान्फ्रेन्स में भाग लिया, और उसी दिन शाम को 1.50 लाख की उपस्थिति में भाषण दिया।

उन दिनों सरदार ने देखा कि हिन्दुस्तान के मुसलमान अब भी छुपे-छुपे पाकिस्तान की मदद कर रहे हैं। सरदार को भारत के मुसलमानों की इस नीति के प्रति बढ़ा असन्तोष था। इस असन्तोष का प्रकाश आपने 9 जनवरी, 1948 को लखनऊ के भाषण में किया। इस भाषण की खूब चर्चा हुई। आपने कहा था :

"मैं मुसलमानों का सच्चा मित्र हूँ, यद्यपि मुझे उनका दुश्मन कहा जाता है। मैं लाग-लपेट की बातें नहीं करता । बगुला भगत बनना मुझे नहीं आता । मुसलमानों को मैं कह देना चाहता हूँ कि केवल शाब्दिक समर्थन से वे अपने पुराने पापों को नहीं धो सकते। उन्हें चाहिए कि वे पाकिस्तान के हमलों का विरोध करें और देश-भक्ति का परिचय दें। वे दो नावों पर एक नहीं हो सकते। आपको एक नाव चुन लेनी भारत के प्रति दिल से वफ़ादार नहीं हैं उन्हें चाहिए कि वे पाकिस्तान चले जायें।" साथ सवार होगी।

मुसलमानों को चेतावनी देकर ही सरदार वल्लभभाई चुप नहीं रहे । राष्ट्रीय-स्वयं-सेवक संघ को भी आप ने इन शब्दों में सावधान किया था- "मैं राष्ट्रीय-स्वयं-सेवक संघ से अपील करता हूँ कि संघ साम्प्रदायिक कट्टरता को छोड़ कर बुद्धिमानी और चतुराई से काम ले। संघ को चाहिए कि वह कभी आक्रमण में पहल न करे।" हिन्दू सभा के हिमायतियों से आपने अपील की थी कि वे कांग्रेस के साथ सम्मिलित हो जाँय। आपने उन्हें सम्बोधन करते हुए कहा कि - "यदि आप अपने को हिन्दू-धर्म की रक्षा के ठेकेदार समझते हैं तो यह आपकी भूल है। हिन्दू-धर्म बड़ा उदार है। उसमें बड़ी है। वह इतना सङ्कीर्ण नहीं जितना आप समझते हैं।" मेरा आरएसस को खुला प्रस्ताव है।

राश्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर.एस.एस.) पर प्रतिबंध

आरएसएस को मैंने उन्हें खुला प्रस्ताव दिया है। अपनी योजनाएँ बदलें, गोपनियता त्यागे, भारत के संविधान का सम्मान करें, राष्ट्रीय ध्वज) के इति अपनी निष्ठा दिखाएँ और हमें विश्वास दिलाएँ कि हम आपकी बातों पर अरोख कर सकते हैं। चाहे वे दोस्त हों या दुश्मन, और चाहे वे हमारे अपने प्यारे बच्चे ही क्यों न हो, हम उन्हें आग से खेलने की इजाज़त नहीं देंगे व्यकि घर में आग लग जाए। युवाओं को हिंसा और विध्वंसकारी गतिविधियों में शामिल होने देना अपराध होगा।

सरदार कल्लभभाई पटेल, एक सार्वजनिक भाषण के दौरान आरएसएस पर बोलते हुए जनवरी 1948 में, हिंदुत्व कार्यकर्ता नाथूराम गोडसे ने महात्मा गांधी की हत्या कर दी थी। हत्या के बाद, हिंदू राष्ट्रवादी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के कई प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया और 4 फरवरी 1948 को पटेल ने गृह मंत्री के तौर पर संगठन पर प्रतिबंध लगा दिया। हत्या से संबंधित अदालती कार्यवाही के दौरान, गोडसे ने दावा करना शुरू कर दिया कि उसने 1946 में संगठन छोड़ दिया था। वल्लभभाई पटेल ने

टिप्पणी की थी कि "गांधी की मृत्यु के बाद आरएसएस के लोगों ने खुशी जताई और मिठाइयाँ बांटी।

अगस्त 1948 में अपनी रिहाई के बाद गोलवलकर ने प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को आरएसएस पर प्रतिबंध हटाने के लिए लिखा। नेहरू के जवाब के बाद कि यह मामला गृह मंत्री की जिम्मेदारी है, गोलवलकर ने इस बारे में वल्लभभाई पटेल से निवेदन किया। पटेल ने तब एक पूर्ण पूर्व शर्त की मांग की कि आरएसएस एक औपचारिक लिखित संविधान को अपनाए और इसे सार्वजनिक करे, जहां पटेल ने आरएसएस से अपेक्षा की कि वह भारत के संविधान के प्रति अपनी वफादारी की प्रतिज्ञा करे, तिरंगे को भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में स्वीकार करे. संगठन के प्रमुख की शक्ति को परिभाषित करे, आंतरिक चुनाव कराकर संगठन को लोकतांत्रिक बनाए, आंदोलन में पूर्व-किशोरों को नामांकित करने से पहले उनके माता-पिता को अधिकृत करे, और हिंसा और गोपनीयता का त्याग करे।

गोलवलकर ने इस मांग के खिलाफ एक बड़ा आंदोलन चलाया जिसके दौरान उन्हें फिर से जेल जाना पड़ा। बाद में, आरएसएस के लिए एक संविधान का मसौदा तैयार किया गया, हालाँकि, शुरुआत में इसमें पटेल की कोई भी माँग पूरी नहीं हुई। फिर से आंदोलन करने के असफल प्रयास के बाद, अंततः आरएसएस के संविधान में पटेल की इच्छा के अनुसार संशोधन किया गया, जिसमें संगठन के प्रमुख के चयन की प्रक्रिया और पूर्व-किशोरों के नामांकन को छोड़कर कुछ बदलाव किए गए। हालाँकि, संगठन का आंतरिक लोकतंत्र, जो इसके संविधान में लिखा गया था, एक 'मृत पत्र' बनकर रह गया।

11 जुलाई 1949 को भारत सरकार ने एक विज्ञप्ति जारी करके आरएसएस पर से प्रतिबंध हटा लिया, जिसमें कहा गया कि आरएसएस पर से प्रतिबंध हटाने का निर्णय आरएसएस नेता गोलवलकर के इस वचन के मद्देनजर लिया गया

था कि आरएसएस के संविधान में भारत के संविधान के प्रति समूह की निष्ठा और भारत के राष्ट्रीय ध्वज के प्रति स्वीकृति और सम्मान को अधिक स्पष्ट किया जाएगा, जिसे लोकतांत्रिक तरीके से तैयार किया जाना था।

29 मार्च 1949 को अधिकारियों ने पटेल, उनकी बेटी मणिबेन और पटियाला के महाराजा को दिल्ली से जयपुर ले जा रहे रॉयल इंडियन एयर फोर्स डे हैविलैंड इव के साथ रेडियो संपर्क खो दिया। पायलट को अशांति के कारण कम ऊंचाई पर उड़ान भरने का आदेश दिया गया था। य उड़ान के दौरान, इंजन में बिजली की कमी के कारण पायलट को राजस्थान के एक रेगिस्तानी इलाके में आपातकालीन लैंडिंग करनी पड़ी। कम ऊंचाई पर विमान की उड़ान के कारण, पायलट विमान के वीएचएफ रेडियो के साथ संकट कॉल भेजने में असमर्थ था, न ही वह अपने एचएफ उपकरण का उपयोग कर सकता था क्योंकि चालक दल के पास प्रशिक्षित सिग्नलर की कमी थी। सभी यात्रियों के सुरक्षित होने के बाद, पटेल और अन्य ने पास के एक गाँव और स्थानीय अधिकारियों को ट्रैक किया। जब पटेल दिल्ली लौटे, तो हज़ारों कांग्रेसियों ने उनका ज़ोरदार स्वागत किया। संसद में सांसदों ने पटेल का लंबे समय तक खड़े होकर अभिवादन किया और आधे घंटे के लिए कार्यवाही रोक दी।

कांग्रेस के उन नेताओं को भी आपने चेतावनी दी जो कांग्रेस के नाम पर अन्य सभी दल के लोगों को चुप करना चाहते थे। आपने कहा-

"आप लोग शासन का अधिकार पाकर इतने घमंडी न हो जाँय कि सब को डण्डे के जोर से कुचलने की ठान लें। डण्डे के प्रहार से किसी भी संगठन को मिटाया नहीं जा सकता। इण्डा तो चोर-डाकुओं के लिए इस्तेमाल किया जाता है। विपक्षीय दलो के लोग चोर-डाकू तो हैं नहीं, वे भी देशभक्त हैं, वे भी अपने देश से प्रेम करते हैं। कांग्रेस को चाहिये कि वह उन पर प्रेम से विजय पाने की कोशिश करे, डण्डे के जोर से नहीं।"

रामराज्य की स्थापना

गांधी जी ने दिल्ली और पंजाब में हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों को प्रेमपूर्ण बनाने के लिए दिल्ली में उपवास शुरू कर दिया था। जिस दिन उपवास शुरू हुआ उसी दिन सरदार वल्लभभाई को राजकोट जाना पड़ा। राजकोट में 15 जनवरी1948 के दिन आपने गांधी जी के उपवास का जिक्र करते हुए कहा :-

"मैं बहुत दुखी हूँ। महात्मा जी को उपवास की हालत में छोड़कर मुझे यहां आना पड़ा। आजकल कुछ हिन्दुओं ने महात्मा जी को गालियां देना अपना पेशा बना लिया है। मैं ऐसे लोगों को हिन्दू नहीं मानता। महात्मा जी के तपोबल ने ही हमें स्वाधीन बनाया है। उस स्वाधीनता को रामराज्य में बदलना आपका काम है। रामराज्य की पहली शर्त हिन्दू-मुस्लिम एकता है और दूसरी है हरिजन उद्धार। स्वावलम्बी होना रामराज्य की तीसरी शर्त है। हमें गांवों में पंचायते खोलनी चाहिये। हमारी संस्कृति हमें जीवन के ऊँचे आदर्श सिखाती है। उन आदर्शों के प्रति यदि हम सच्चे रहें तो रामराज्य स्वयं स्थापित हो जायगा।"

मैं सचाई को नहीं छोडूंगा

सरदार वल्लभभाई को लौह-पुरुष कहा जाता था। शासन-पद संभालने के बाद उनका यह गुण और भी अधिक स्पष्ट हो गया था। झूठ के सामने झुकना या बनावट की मीठी बातें करना उन्हें नहीं आता था। इसीलिए आपके विपक्षी आप से डरते थे और आपको बदनाम करने की कोशिश भी करते थे।

आपके लखनऊ वाले भाषण से कुछ मुसलमान नेता बहुत सुंझला गये। उन्होंने गांधी जी से भी शिकायत की। इस की चर्चा सरदार वल्लभभाई ने अपने १५ जनवरी वाले बम्बई के भाषण में की। बम्बई के म्युनिसिपल कार्पोरेशन द्वारा आपको एक मान-पत्र भेंट किया गया था। लाखों की भीड़ में भाषण देते हुये आपने कहा था:-

"मैं बहुत स्पष्टवादी हूँ और बहुत कड़वी बात कह देता हैं- हिन्दुओं को भी, मुसलमानों को भी। फिर मी मैं दोनों का मित्र हैं। जो मुसलमान मुझे अपना मित्र नहीं मानते वे दीवाने हैं। उन्हें सच-झूठ की तमीज़ नहीं है। लेकिन उन्हें खुश करने के लिए ही तो मैं सचाई को नहीं छोड़ सकता। अपने कर्त्तव्य से मुख नही मोड़ सकता। कुछ मुसलमान मेरे लखनऊ बाले भाषण को लेकर गांधी जी से शिकायत करने गये थे। मैंने अपने भाषण में मुसलमानों को कहा था कि काश्मीर व हैदराबाद के प्रति पाकिस्तान ने जो नीति रखी है उसका उन्हें

प्रतिवाद करना चाहिये। यदि बे ऐसा नहीं करते तो अपना कर्तव्य पूरा नहीं करते गांधी जी ने उनकी शिकायतें सुनकर सार्वजनिक रूप से मेरे कथन का स्पष्टीकरण किया है, और मेरी हिमायत की है। मुझे इससे बड़ा दुख हुआ, क्योंकि मैं इतना कमजोर नहीं हूँ कि दूसरों को मेरी हिमायत करनी पड़े।" अपनी स्पष्टवादिता के कारण आप के प्रति कई अमपूर्ण बातें फैल जाती थीं किन्तु सचाई प्रकट होने पर आपका उज्ज्वल चरित्र और भी तेजस्वी रूप से प्रकट होता था।

20 जनवरी, 1948 को आपने बम्बई के मज़दूरों के सामने परेल के कामगार मैदान में भाषण दिया था। उस में भी आपने मजदूरों को कहा था कि- "आज हम चौराहे पर खड़े हैं। हमारी भूलें हमें हमेशा के लिये बरबादी के गड्ढे में गिरा देंगी। हमें बहुत सोच-समझकर आगे बढ़ना है। बरबाद होंगे तो हम दोनों होंगे- मज़दूर भी, पूंजीपति भी। दोनों के भविष्य एक दूसरे से मिले हुए हैं।

"समाजवादियों ने जब एक दिन की सांकेतिक हड़ताल का संगठन किया था तो देश का कल्याण नहीं हुआ था। जहाज़ी बन्दरगाह के मजदूरों की हड़ताल से देश में अनाज आना रुक जाता है। गरीब लोग कष्ट पाते हैं। कष्टों का ज़्यादा बोझ गरीबों पर ही पड़ता है। समाजवादी इन बातों को नहीं सोचते। वे शासन अधिकार चाहते हैं तो ले लें। कांग्रेस का ध्येय स्वाधीनता की प्राप्ति था, वह तो पूरा हो गया। अब कोई भी शासन का अधिकार ले सकता है। किन्तु मज़दूरों को इन दल-बन्दियों की दलदल में नहीं फँसना चाहिये।"

मैं गरीबों का दोस्त हूँ

इसके बाद 22 जनवरी, 1948 के दिन अहमदाबाद में महाजन एसोसियेशन के सामने भाषण देते हुए भी आपने इन्हीं बातों को दोहराया। वहां आपने कहा था-

"मुझ में यदि कुछ गुण है तो गांधी जी की ही संगति से है। मैंने जो कुछ पाया है उन्हीं की देन है। सबसे पहले महात्मा जी ने ही अहमदाबाद में वस्त्र-व्यव-सायी मजदूरों का एसोसियेशन बनाया था। आज मजदूरों में जो संगठन नज़र आता है उसकी नींव महात्मा जी ने ही रखी थी।"

सरदार वल्लभभाई की कुशल और दृढ़ शासन-नीति का ही यह प्रभाव है कि हिन्दुस्तान अभी तक लाल झण्डे की छाया में नहीं गया। हिन्दुस्तान भी चीन बन जाता, यदि सरदार पटेल न होते ।

आपने कई बार देश को अराजकता के गड्ढे में ' गिरने से बचाया। कलकत्ता के सभी सरकारी नौकरों ने एक बार हड़ताल करने का निश्चय किया।

हड़ताल की पूरी तैयारियां हो चुकी थीं। आप उससे एक दिन पहले 3 जनवरी, 1948 के दिन कलकत्ता पहुँचे । 9 लाख से अधिक लोगों की भीड़ आपका भाषण सुनने पहुँची। आपने कहा-

"जो लोग मौजूदा मन्त्रियों के काम से सन्तुष्ट नहीं हैं उन्हें चाहिये कि वे वैधानिक रीति से उन मंत्रियों को हटा दें। गुन्डागीरी से शहरी जीवन बरबाद होता है। मंत्रियों को आपने ही बनाया है, आप जब चाहें उन्हें हटा सकते हैं, किन्तु हड़ताल से नहीं, वैधानिक उपायों से ।"

"कुछ लोग कहते हैं मैं नरेशों, ज़मीदारों और पूंजीपतियों का दोस्त हूँ। किन्तु मेरा तो दावा है कि मैं सभी का दोस्त हूँ। गांधी जी से मैंने एक बात सीखी थी, वह यह कि अपनी मल्कीयत नहीं बनाना। मेरे पास आज कोई मल्कीयत नहीं है। मैं गरीबों का भी दोस्त 'हूँ, अमीरों का भी। जो लोग अमोरों को गालियां देकर ही देश के नेता बनना चाहते हैं वे भूल करते हैं। ऐसा करना आजकल फैशन हो गया है।"

"ये लोग देश में मजदूर-राज स्थापित करना चाहते हैं। इंगलैण्ड में भी मज़दूरों का राज है। किन्तु वहाँ मज़दूरों ने हड़ताले करके यह राज नहीं लिया है। मज़दूर-राज हम गांधी जी के आदर्शों पर चलकर ही ले सकते हैं।"

पाकिस्तान को चुनौती

पाकिस्तान के शासक यदि किसी के व्यक्तित्व को मानते थे तो पटेल को ही मानते थे। हैदराबाद की समस्या हल होने से पहले पाकिस्तान की सरकार हैदराबाद से मिलकर हिन्दुस्तान को नुक़सान पहुँचाने की साजिशें कर रही थी। सरदार पटेल ने 3 जनवरी, 1948 के दिन कलकत्ता में भाषण देते हुए उन्हें इन शब्दों में चेतावनी दी थी:-

"हम पाकिस्तान से इतना ही चाहते हैं कि वह हमारे मामलों में दखल न दे। तुम्हें पाकिस्तान मिल गया। जैसा मन में आये उसका इस्तेमाल करो। उसे बहिश्त बनाओ या दोज़ख-यह तुम्हारा अधिकार है, उसे जैसा चाहो बना लो।

पाकिस्तान वाले कहते हैं कि उसके दुश्मन उसे तबाह करना चाहते हैं। मैं कहता हूँ, यह तबाही आएगी तो बाहर से नहीं, भीतर से ही आएगी। हमने पाकिस्तान को बड़ी उदारता से मुँहमाँगी चीजें दे दीं। लेकिन हम यह बर्दास्त नहीं करेंगे कि वे उससे गोलाबारूद बनाकर हम पर हमला करें।

"मैं पाकिस्तान को विश्वास दिलाता हूँ कि हम पाकिस्तान का अकल्याण नहीं चाहते। किन्तु उन्हें भी चाहिए कि वे हमें शान्तिपूर्वक रहने दें।

"कश्मीर का प्रश्न हमने राष्ट्रसंघ के सुपुर्द कर दिया है। जनता का बहुमत ही काश्मीर के भविष्य का फैसला करेगा। किन्तु जब तक खून खराबी चल रही

है जनता की राय कैसे ली जा सकती है? यदि हमें तलवार के ज़ोर पर ही काश्मीर की रक्षा करनी पड़े तो जनता की राय लेने का प्रश्न ही नहीं उठता। मैं पाकिस्तान को खबरदार कर देना चाहता हूँ कि हम जनता की राय जाने बिना काश्मीर की भूमि का एक इञ्च हिस्सा भी पाकिस्तान के सुपुर्द नहीं करेंगे।"

गांधी जी की हत्या

गांधी जी की हत्या से सरदार पटेल की कमर टूट गई। दोनों में अगाध प्रेम था। सरदार पटेल गांधी जी को बड़ा भाई और गुरु दोनों मानते थे। बलिदान के पूर्व गांधी जी सरदार पटेल से ही बातें कर के प्रार्थना सभा में आ रहे थे। दोनों की पहली भेंट अहमदाबाद में सन् १६१६ में हुई। ३२ वर्ष तक दोनों कदम से कदम मिलाते हुए एक ही रास्ते के यात्री रहे थे। कई बार जेल में भी दोनों साथ रहे थे। सरदार पटेल गांधी जी की सेवा से कभी नहीं चूकते थे। स्वयं गांधी जी ने सरदार की सेवा के प्रति इन शब्दों में कृतज्ञता प्रकट की थी :- "जेल में बल्लभभाई ने मेरे प्रति जो स्नेह दिखाया उससे मुझे अपनी माता द्वारा प्रकाशित स्नेह की याद आ रही है। मैं नहीं जानता था कि उनके पास एक माँ का हृदय भी है।"

साधारणतया लोगों को सरदार वल्लभभाई पटेल के निर्मोही और कठोर रूप का ही पता था। शासन के या कर्तव्य-पालन के समय आप सचमुच पहुत कठोर हो जाते थे। उस समय आप हृद्य की सारी कोमलताओं को ताक पर रख देते थे, और बिल्कुल निर्मम बन जाते थे।

आपकी कर्तव्य पालन का इस से बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता था कि जब अदालत में वकील की हैसि-यत से बहस करते हुए आपको अपनी पत्नी की मृत्यु का समाचार मिला तब भी आपने अपना कर्त्तव्य नहीं छोड़ा। बहस

जारी रखी। मृत्यु के तार को पढ़ लिया और मोड़ कर जेब में रख लिया। बहस समाप्त होने के बाद ही आपने अदालत से विदा ली ।

किन्तु यह कठोरता केवल शासन और कर्त्तव्य-पालन में ही थी। अन्यथा आप भी बड़ा स्नेही हृदय और विनोदी स्वभाव रखते थे ।

आपका विनोद बड़ा स्पष्ट और चुभने वाला होता था। 1931 में जब आपके बड़े भाई बीमार थे तब किसी ने इनसे पूछा "आपके भाई को कौनसी बीमारी है ?" आपने मसखरेपन से जवाब दिया- "उन्हें असेम्बली का प्रधान न बनने की बीमारी है।"

आपके उदबोधन में भी इस विनोदं का आभास मिलता था। अपने उदबोधन में आप छोटे २ लतीफ भी सुनाते जाते थे। उदबोधन का विषय कितना ही गम्भीर हो, आप उसे सीधी-सादी भाषा और व्यंग-विनोद भरे चुटकुलों से बड़ा दिलचस्प बना देते थे।

हैदराबाद का प्रश्न हल करने में आपको आशातीत सफलता मिली थी। डर था कि हैद्राबाद की चिनगा-रियां देश भर में फैल कर कहीं आग न लगा दें। किन्तु सरदार वल्लभभाई की दृढ़ शासन-नीति ने देश को बचा लिया। हैदराबाद के निवासियों को नबाब का सेनापति कासिम रजवी के अत्याचारों से बचाने के लिये आपने फौज को रियासत में प्रवेश करने की आज्ञा दे दी। 5 दिन में ही भारतीय -सेना सिकन्द्राबाद पहुँच गई। भारतीय सेना ने निज़ाम को भी रज़वी के चंगुल से बचा लिया। कासिम रज़वी के साथ उसके दल के हज़ारों लोग गिरफ्तार कर लिये गए। निज़ाम की सेना ने हथियार डाल दिये । निज़ाम ने सन्धि करनी चाही, किन्तु सरदार पटेल ने बिना शर्त समर्पण करने की माँग की। निज़ाम को मानना पड़ा ।

हैदराबाद के समर्पण के साथ काश्मीर के अतिरिक्त देश की सब रियासतें भारतीय में सम्मिलित हो चुकी थीं। सरदार पटेल के इस चमत्कारी कार्य को

भारत के इतिहास में सुनहरी अक्षरों में लिखा जायगा। सदियों तक आपका यशस्वी नाम अमर रहेगा। जो काम सम्राट् अशोक और चन्द्रगुप्त नहीं कर सके वह काम आपकी राजनैतिक बुध्दिमत्ता से कर दिखाया ।

रियासतों के एकीकरण के बाद भी आपकी परे-शानियां दूर नहीं हुई। आपका आदर्श भारत को अखण्डित रखना था। दुश्मन इस देश को खण्ड खण्ड करना चाहते थे। रियासतों की समस्या के बाद प्रांतों के विभाजन का प्रश्न उठ खड़ा हुआ। भाषा-भेद के आधार पर प्रांतों के बँटवारे की मांगें होने लगीं। सरदार पटेल ने एक बार फिर अपनी आवाज़ जनता तक पहुँचाई और लोगों को किसी भी आधार पर देश का विभाजन न करने की सलाह दी। इस सम्बन्ध में आपका नागपुर का भाषण बड़े महत्त्व का था। आपके ही प्रभाव से कांग्रेस हाई कमान ने भाषा के आधार पर प्रान्तों के स्थगित गठन का करने का निश्चय कर दिया।

आपका दृढ़ विश्वास था कि देश को खण्डित करने का कोई भी काम देश को तबाह कर देगा। आप सम्पूर्ण भारत को एक महान् राष्ट्र बनाना चाहते थे, जो एशिया का ही नेतृत्व नहीं करेगा वरन् संसार में शान्ति स्थापित करने में भी सहायक होगा ।

स्वाधीनता मिलने के बाद आपको हवाई जहाज़ से दूर-दूर तक यात्रा करनी पड़ती थी। उस उम्र में हवाई जहाज की लम्बी यात्राओं का कष्ट उठाना आपकी आश्चर्यजनक सहन-शक्ति को प्रकट करता है।

इन हवाई यात्राओं में एक यात्रा बड़े खतरे की हुई। राजस्थान प्रांत का उद्घाटन करने के लिए आप दिल्ली से जयपुर जा रहे थे। रास्ते में जहाज़ का इंजन खराब हो गया । पायलेट ने जहाज को एक नदी के किनारे रेतीले मैदान में उतार लिया । 4 घंटे तक देश भर में चिन्ता फैली रही। देश के सौभाग्य से आपको कोई चोट नहीं पहुँची । आपकी कुशलता के समाचार ने देश भर में फिर प्रसन्नता की लहर दौड़ा दी। संसद । सदस्यों ने आपकी सुरक्षा के लिये प्रार्थना की और ईश्वर

को धन्यवाद दिया। राजस्थान का उद्घाटन करने के बाद आप जब नई दिल्ली आये और संसद में गये तो सदस्यों ने इतने उत्साह के साथ आपका स्वागत किया कि संसद के इतिहास में आज तक किसी व्यक्ति का वैसा स्वागत नहीं किया गया। संसद की ओर से आपको एक चाँदी का हवाई जहाज़ भी भेंट किया गया।

संविधान निर्माण में योगदान

भारत का संविधान न केवल देश की राजनीतिक संरचना का आधार है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकारों का भी प्रतीक है। स्वतंत्रता के बाद, जब देश को एक सशक्त संविधान की आवश्यकता थी, सरदार वल्लभभाई पटेल ने इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अध्याय में, हम पटेल के योगदान को विस्तार से समझेंगे और यह देखेंगे कि उन्होंने संविधान निर्माण में कैसे सहयोग किया।

संविधान सभा का गठन

भारत का संविधान बनाने के लिए संविधान सभा का गठन किया गया था। इस सभा में विभिन्न राजनीतिक दलों और समुदायों के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया। पटेल ने इस सभा में अपनी उपस्थिति से यह सुनिश्चित किया कि एकता और अखंडता का मूल सिद्धांत संविधान में प्रतिबिंबित हो।

- **प्रमुख सदस्य:** पटेल संविधान सभा के प्रमुख सदस्यों में से एक थे। उन्होंने अपने अनुभव और राजनीतिक समझ के आधार पर कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी राय प्रस्तुत की।

- **सामाजिक समरसता:** पटेल का मानना था कि संविधान में सभी नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रताओं की रक्षा की जानी चाहिए। उन्होंने इसे सुनिश्चित करने के लिए कई सुझाव दिए।

केंद्रीयता और संघीयता

पटेल ने भारतीय संघ के लिए एक मजबूत केंद्रीय सरकार की आवश्यकता को समझा। उन्होंने संविधान में केंद्रीयता और संघीयता के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया। उनके विचारों ने कई महत्वपूर्ण प्रावधानों को आकार दिया:

- **केंद्रीय शक्तियाँ:** उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि केंद्र सरकार के पास पर्याप्त शक्तियाँ हों ताकि वह राज्यों के बीच समन्वय स्थापित कर सके और किसी भी संकट का प्रभावी ढंग से समाधान कर सके।

- **राज्य के अधिकार**: हालांकि पटेल ने केंद्रीयता पर जोर दिया, लेकिन उन्होंने राज्यों के अधिकारों को भी महत्व दिया। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि राज्यों को अपनी स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता मिले।

सामाजिक न्याय और समानता

पटेल ने भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद और भेदभाव के खिलाफ खड़े होने का संकल्प लिया। उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए संविधान में प्रावधान किए कि सभी नागरिकों को समान अधिकार और अवसर प्राप्त हों:

- **आरक्षण का प्रावधान:** पटेल ने अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए आरक्षण का समर्थन किया। उन्होंने यह महसूस

किया कि समाज के कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने के लिए विशेष उपाय किए जाने चाहिए।

- **समानता का अधिकार:** उन्होंने संविधान में समानता का अधिकार शामिल करने का समर्थन किया, जिससे सभी नागरिकों को बिना किसी श्रेठभाव के समाज अधिकार मिल सका।

लोकतंत्र और स्वतंत्रता के मूल्य

पटेल ने लोकतंत्र के महत्व को समझा और सुनिश्चित किया कि संविधान में नागरिकों की स्वतंत्रता और अधिकारों की रक्षा की जाए:

- **स्वतंत्रता का अधिकार:** पटेल ने यह सुनिश्धित किया कि संविधान में सभी नागरिकों को बोलने, विचार व्यक्त करने और संगठन बनाने की स्वतंत्रता मिले।

- **न्यायपालिका की स्वतंत्रता**: उन्होंने न्यायपालिका की स्वतंत्रता को महत्वपूर्ण बताया। उनका मानना था कि एक स्वतंत्र न्यायपालिका ही नागरिकों के अधिकारों की रक्षा कर सकती है।

संविधान का अंतिम रूप

संविधान सभा की बैठक के दौरान, पटेल ने सभी सदस्यों को एकजुट रहने और संविधान को एक सशक्त दस्तावेज़ के रूप में अंतिम रूप देने के लिए प्रेरित किया। उनका मानना था कि संविधान केवल एक कानूनी दस्तावेज़ नहीं, बल्कि भारतीय लोगों के लिए एक जीवन दर्शन होना चाहिए।

सरदार वल्लभभाई पटेल का संविधान निर्माण में योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। उनकी दूरदर्शिता, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक न्याय के प्रति उनकी

प्रतिबद्धता ने भारत के संविधान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज का भारतीय संविधान उनके विचारों और मूल्यों का प्रतिफल है।

"भारत के लौह पुरुष के रूप में उनकी पहचान ने उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में स्थापित किया, जिसने न केवल राजनीतिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी भारतीय समाज को एक नई दिशा दी।

"कड़ी मेहनत और लगन से ही लक्ष्य प्राप्त होता है।"

सरदार वल्लभभाई पटेल

देहावसान

1949 की गर्मियों में पटेल का स्वास्थ्य तेजी से गिरता गया। बाद में उन्हें खून की खांसी होने लगी, जिसके बाद मणिवेन ने उनकी बैठकों और काम के घंटों को सीमित करना शुरु कर दिया और पटेल की देखभाल के लिए एक व्यक्तिगत चिकित्सा स्टाफ की व्यवस्था की। पश्चिम बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. बिधान चंद्र रॉय ने पटेल को उनके आसन्न अंत के बारे में मजाक करते सुना और एक निजी बैठक में पटेल ने अपने मंत्रिमंडल के सहयोगी एनवी गाडगिल के सामने स्वीकार किया कि वह ज्यादा दिन जीवित नहीं रहेंगे। 2 नवंबर के बाद पटेल का स्वास्थ्य बिगड़ गया, जब वह बार-बार बेहोश होने लगे और अपने बिस्तर तक ही सीमित रहे। 12 दिसंबर को डॉ. रॉय की सलाह पर उन्हें बॉम्बे ले जाया गया, ताकि उनकी हालत गंभीर होने के कारण उन्हें स्वास्थ्य लाभ मिल सके। नेहरू, राजगोपालाचारी, राजेंद्र प्रसाद और मेनन सभी उन्हें दिल्ली हवाई अड्डे पर छोड़ने आए। उन्हें इस तनाव से बचाने के लिए, विमान जुहू हवाई अड्डे पर उतरा जहाँ मुख्यमंत्री बी.जी. खेर और मोरारजी देसाई उन्हें लेने के लिए मौजूद थे. तथा बॉम्बे के गवर्नर की कार वल्लभभाई को बिड़ला हाउस ले गई।

दिल का दौरा (उनका दूसरा) पड़ने के बाद, पटेल का 15 दिसंबर 1950 को बॉम्बे के बिड़ला हाउस में निधन हो गया। अभूतपूर्व और अप्रतिम इशारे में,

उनकी मृत्यु के अगले दिन भारत के नागरिक और पुलिस सेवाओं के 1,500 से अधिक अधिकारी दिल्ली में पटेल के निवास पर शोक व्यक्त करने के लिए एकत्र हुए और भारत की सेवा में "पूर्ण निष्ठा और निरंतर उत्साह" का वचन दिया। कई सरकारों और विश्व नेताओं ने पटेल की मृत्यु पर शोक संदेश भेजे, जिनमें ट्रिग्वे ले, संयुक्त राष्ट्र के महासचिव, इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो, पाकिस्तान के प्रधान मंत्री लियाकत अली खान और यूनाइटेड किंगडम के प्रधान मंत्री क्लेमेंट एटली शामिल थे।

पटेल को श्रद्धांजलि देते हुए, प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने एक सप्ताह के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की। 10 पटेल का अंतिम संस्कार गिरगांव चौपाटी पर करने की योजना थी, लेकिन जब उनकी बेटी ने बताया कि उनकी इच्छा है कि उनका अंतिम संस्कार एक आम आदमी की तरह उसी स्थान पर किया जाए जहाँ उनकी पत्नी और भाई का पहले अंतिम संस्कार किया गया था, तो इसे बदलकर सोनापुर (अब मरीन लाइन्स) कर दिया गया। बंबई के सोनापुर में उनके अंतिम संस्कार में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, राजगोपालाचारी और राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद सहित दस लाख लोगों ने भाग लिया था।

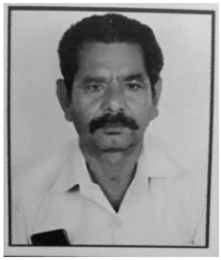

लेखक परिचय

श्री सुखनंदन पटैल जी का जन्म दिनांक 07 फ़रवरी 1961में ग्राम पालर,पोस्ट मुडिया जिला दमोह में हुआ था | पिता जी का नाम स्व.श्री अनंतराम पटैल एवं पालन पोषण पैतृक कृषक परिवार में हुआ| |प्रारंभिक शिक्षा गाँव में एवं उच्चशिक्षा एम.ए.अर्थशास्त्र डा हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में पूर्ण हुई |प्रारंभ से ही देश प्रेम एवं समाज सेवा की भावना होने के कारण , राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में 1986से 1995 तक सक्रीय कार्यकर्ता के रूप में सेवा कार्य करते रहे एवं उसी दौरान भारतीय किसान संघ में जिला दमोह के महामंत्री एवं अध्यक्ष पद रहते हुए ,भारतीय जनता पार्टी में सक्रीय कार्यकर्ता के रूप में कार्यरत रहे | समाज में समता,समानता एवं सर्व उन्नति की भावना से प्रेरित होकर 1995 में बहुजन समाज पार्टी में सम्मलित हुए एवं 1996 में बहुजन समाज पार्टी के दमोह -पन्ना लोकसभा से प्रत्यासी रहे|

पिछड़ा वर्ग में सेवाओं के रूप में 1990 से 2003 पिछड़ा वर्ग संगठन की युवा इकाई के जिला अध्यक्ष रहे एवं वर्तमान समय में संयुक्त मोर्चा पिछड़ा वर्ग, संभागीय अध्यक्ष पद पर रहते हुए, पिछड़ा वर्ग में निरंतर सेवाएं दे रहें हैं|

प्रकाशित पुस्तकें

प्रथम पुस्तक - पिछड़ा वर्ग पर वर्ण व्यवस्था का प्रभाव एवं हमारे महापुरुष

द्वितीय पुस्तक - लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल

सन्दर्भ ग्रन्थ

(1) लोह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल (लेखक-सीताराम पारीक)

(2) जीवनी सरदार वल्लभ भाई पटेल (लेखक-शुभम गुप्ता)

(3) आधुनिक भारत के शिल्पकार सरदार वल्लभ भाई पटेल (लेखिका-कल्पना पटेल)

(4) हमारे अखण्ड राष्ट्र निर्माता सरदार वल्लभ भाई पटेल (लेखक- मधु धामा)

(5) गूगल सोर्स